SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पारंपरिक लोक चित्रण कला संजा का परिधान डिजाइनिंग में रूपांकन

आरती लाड़, फैशन टेक्नोलाजी विभाग,
शासकीय महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
आरती लाड़, फैशन टेक्नोलाजी विभाग,
शासकीय महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय,
भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/10/2021
Revised on : -----
Accepted on : 28/10/2021
Plagiarism : 01% on 22/10/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Friday, October 22, 2021
Statistics: 15 words Plagiarized / 2607 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

ikjaifjd y¨d fp=.k dyklatkdk ifj/kku fMtkbfuax esa :ikadu Jherh vkjrh yk³] ofj¨B O;k[;krk QS'ku VsDu¨ykth foÒkx] 'kkldh; efgyk i,yhVsfDud egkfo|ky;] Ò¨iky] ¼e-iz-½ aartilad69@gmail.com aa Lkkj&ekyok {ks= dh Áfl) exj yqIr g¨rh y¨d fp=.k

dyk&latk d¨ fo'ks"k vk;q lewg esa iqu% tkx`r djus ds mÌs'; ls ikjaifjd ifj/kku¨a dh fMtkbfuax dj mUgsa mÙkjnkrkvksa ds le{k ÁLrqr dj mudh mi;qärk vkSj foi.ku laca/kh lykg ysdj fdlh fu"d"kZ ij igqapuk gh orZeku v/;;u dk mÌs'; gSA bl mÌs'; gsrq fdUgha ...å

शोध सार

मालवा क्षेत्र की प्रसिद्ध मगर लुप्त होती लोक चित्रण कला–संजा को विशेष आयु समूह में पुनः जागृत करने के उद्देश्य से पारंपरिक परिधानों की डिजाइनिंग कर उन्हें उत्तरदाताओं के समक्ष प्रस्तुत कर उनकी उपयुक्तता और विपणन संबंधी सलाह लेकर किसी निष्कर्ष पर पहुंचना ही वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य है। इस उद्देश्य हेतु किन्हीं ३० उत्तरदाताओं को यादृच्छिकता से चयनित किया गया। डाटा संग्रहण हेतु वरीयता पैमाना एवं बाजार संभावना पैमाना का उपयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ है कि प्राचीन कला को नवीन रूप से प्रस्तुत कर डिजाइनिंग किए गए परिधानों को आयुवर्ग द्वारा अत्याधिक पसंद किया गया है, एवं इसकी बाजार क्षमता बेहतरीन है।

मुख्य शब्द

लोक कला, संजा, पारंपरिक परिधान डिजाइनिंग, हाथ की कढ़ाई कार्य, बाजार क्षमता.

प्रस्तावना

भारत देश है, जहाँ सर्वाधिक लोक कलाओं का जन्म हुआ है। बहुत सी ऐसी लोक कलाऐं हैं, जिनसे हम भारतवासी अनभिज्ञ हैं। अनेक जातियों व जनजातियों में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही पारंपरिक कलाओं को लोककला कहते हैं। इनमें से कुछ आधुनिक काल में भी प्रचलित है, लेकिन कुछ समय के साथ नवीन जीवनशैली में विलुप्त होती जा रही हैं। संजा मध्य प्रदेश के मालवा अंचल की प्रसिद्ध भिति चित्रण लोक परम्परा है। जिस प्रकार भूमि चित्र में मांडना बनाए जाते हैं, उसी प्रकार दीवारों पर गोबर की प्रतिमाऐं बनाकर उन्हें सजाकर पूजा की पद्धति मालवा में प्रचलित है। गोबर से दीवार पर लीपकर उस पर नरम साफ गोबर से विभिन्न आकृतियां बनाकर उनपर रंगबिरंगी फूलों की पंखुडियाँ

चिपकाकर सुसज्जित कर आकर्षक स्वरूप बना दिया जाता है। इस प्रकार तर्जनी एवं अंगूठे से दबा दबाकर दीवार पर चिपकाकर गोबर से निर्मित कर फूलों से सजाई भिति चित्रित प्रतिमाएँ संजा कहलाती हैं।

बचपन से विवाह पूर्व तक कुंवारी कन्याऐं श्राद्ध पक्ष में संध्या के समय अपने–अपने घर में भित्ति को गोबर से चौकोर लीपती हैं। इस लीपन पर गोबर को हाथों से चिपकाकर आकृति उकेरती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में मौसम में आसानी से उपलब्ध रंग बिरंगे गुलतेवड़ीं, चांदनी, हरसिंगार के फूलों के साथ साथ चमकीले सुनहरे कागजों, रंगीन घुटमा पेपरों को चिपकाकर आकृतियों को सजायां जाता हैं, जो अत्यंत मनोहारी लगती हैं। तैयार आकृति की हल्दी कुमकुम से पूजन कर आरती की जाती हैं। माताऐं प्रसाद बनाकर ढांककर भोग रखती हैं। कन्याएँ प्रसाद पहचानने का खेल खेलती हैं, पहचान उपरांत हंसी खुशी के माहौल में प्रसाद वितरण किया जाता है। संजा के गीत गाए जाते हैं, कन्याए ढोलक मंजीरे की थाप पर नृत्य करती हैं। दूसरे दिन उस आकृति के गोबर को हटाकर, पुनः लीपन कर नवीन आकृति निर्मित कर, सजाकर पूजन व अनुष्ठान किया जाता है। यह प्रक्रिया पूरे सोलह दिन की जाती है। हर दिन की नवीन आकृति निर्मित की जाती है। चौदस को किलाकोट मांडते हैं। अमावस को उखाड़कर उस स्थान पर स्वास्तिक अथवा बैलगाड़ी बना दी जाती है। यह सामग्री जलाशय में प्रवाहित की जाती है। संजा पूजन का प्रारंभ भाद्रपद पूर्णिमा को होता है एवं समापन पूर्णाहूति सर्वपित्र अमावस्या को विशाल किलाकोट से होती है। इस दिन नई आकृतियों के साथ पिछले पंद्रह दिनों में बनाई गई समस्त आकृतियां पुनः बनाकर सजाई जाती है। सोलह दिन कन्या की आयु के सोलह बरस के प्रतीक माने जाते हैं, जब तक कन्या विवाह योग्य नहीं हो जाती। विवाह उपरांत श्राद्धपक्ष में मायके आकर नारियां संजा को उजमती हैं। माना जाता है कि, उजमने से ही व्रत का पूरा फल प्राप्त होता है। उजमने में बांस की सोलह छोटी–छोटी टोकरियां सजाई जाती है, जिनमें गेहूं–जौ भरा जाता है।एक छाबड़ी ब्राह्मण के घर पहुंचाना होता है, शेष बची पंद्रह कन्याओं को दी जाती हैं। उजमने में दो किलाकोट बनाए जाते हैं, एक मिट्टी का, दूसरा गोबर का। गोबर वाले को जल में प्रवाहित किया जाता है, जबकि मिट्टी का बना रहता है। ब्याहता लडकी जलाशय पर सज संवरकर अपनी बचपन की सहेलियों के संग पूजन करती हैं, गीत गाती हैं, भोजन करती हैं। तद्उपरांत ब्राह्मण को छाबड़ी के साथ सीधा एवं दक्षिणा भेजी जाती है। इसके बाद संजा मांडना उसके लिए आवश्यक नहीं होता है, और फिर वह अपने ससुराल में कुंवारी कन्याओं के साथ उत्सव में शामिल होती हैं, आयोजन करती हैं।

संजा बचपन से विवाह तक का उत्सव होता है, इसलिए अंतिम दिवस पर की झाँकी में विवाह वर्णित किया जाता हैं। इस लोक कला के माध्यम से कन्याएँ बचपन से गोबर एकत्रित कर उसे साफ करना, गूंथना, हाथों से निश्चित आकार में भिति पर लीपना, कल्पनाशक्ति से अंगुलियों से आकृति बनाना, रंगीन फूलों से सजाकर प्रतिदिन नवीन आकर्षक स्वरूप निर्मित करने जैसे कई कौशल में पारंगत हो जाती हैं। इस परंपरा से कन्याओं में स्वावलंबन, सक्रियता, चुस्ती, लीपने – उकेरने –सजाने का कौशल, सामूहिक रूप से प्रसन्नचित्त होकर कार्य करना आदि सब एक साथ खेल–खेल में सीखती हैं। पूरे सोलह दिन तक किसी कार्य को करना, एक सांस्कृतिक शिविर जैसा होता था, जिसमें कन्याएं अपनी सखी सहेलियों के घर–घर जाकर पूजन करती हैं। समाज को बचपन से ही सांस्कृतिक रूप में तैयार करने की यह पारंपरिक अटूट और अमोघ पद्धतियां रही हैं।

नाथद्वारा मंदिर एवं उस परंपरा के मंदिरों में संजा मांडने की परंपरा का निर्वाह किया जाता है। नाथद्वारा की परम्परा में गोवर्धननाथ के मंदिर में के पूर्णिमा से अमावस्या तक बाजोट पर केले के पत्ते पर सुहागन के फूलों से क्रमशः ये रूप बनाए जाते हैंः पांचे, छबड़ी, बीजारा, घेवर, चौपड़, पाँच कटोरे, फूल, स्वस्तिक, दीप, नगाडे की जोड़, पंखा, झाड़ू, बारह भाई की फौज और किलाकोट। हाथी, घोड़े, पालकी, बगीचे महल आदि भी बनाए जाते हैं। प्रतिदिन चांद सूरज बनाए जाते हैं।

उज्जैन एवं गौतमपुरा की परम्परा में थोडी भिन्नता है। रूपांकन निम्नानुसार हैं:

	मूल रूपांकन	हस्त रूपांकन	कोरल ड्रा साफ्टवेयर का प्रयोग कर संजा के स्पष्ट रूपांकन
पूनम–पाटल			
पडवा–पंखा			
दोज–बाजोट			
तीज–घेवर			
चौथ–चौपड			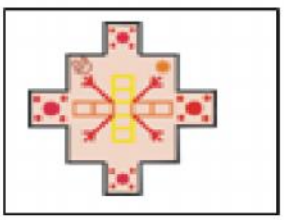

	मूल रूपांकन	हस्त रूपांकन	कोरल ड्रा साफ्टवेयर का प्रयोग कर संजा के स्पष्ट रूपांकन
पाँच कुंवारा कुंवारी			
छठ –छाबड़ी			
सप्तमी– सातिया		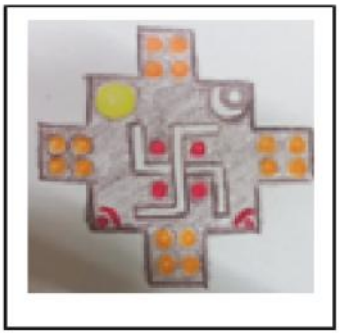	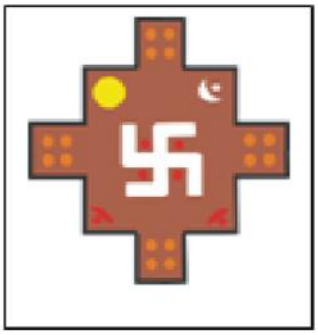
आठम – आठ पंखड़ी का फूल			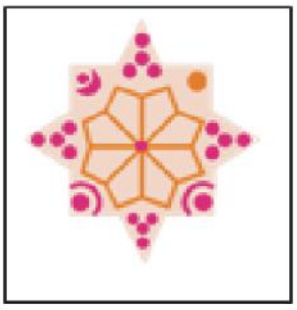

	मूल रूपांकन	हस्त रूपांकन	कोरल ड्रा साफ्टवेयर का प्रयोग कर संजा के स्पष्ट रूपांकन
नवमी – डोकरा–डोकरी	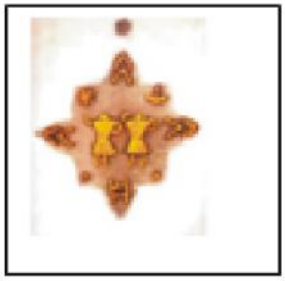		
दसमी –दीवा या जलेबी की जोड			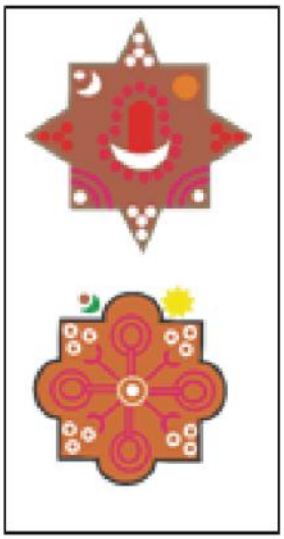
ग्यारस– केले का पेड़			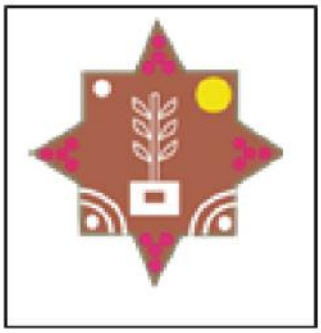

	मूल रूपांकन	हस्त रूपांकन	कोरल ड्रा साफ्टवेयर का प्रयोग कर संजा के स्पष्ट रूपांकन
बारस– खजूर का पेड या मोर मोरनी	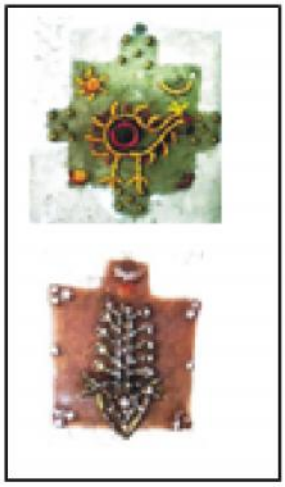	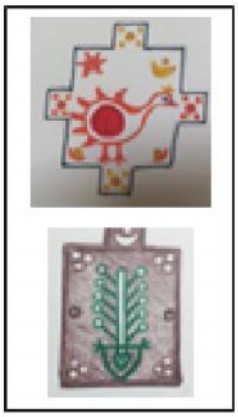	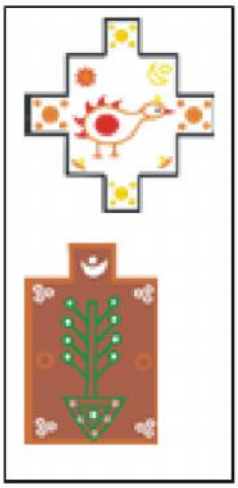
संजा –पालकी		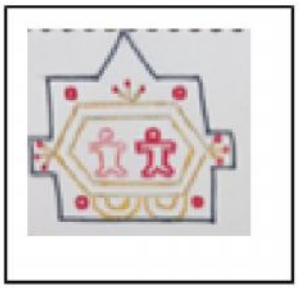	
तेरस – चौदस– अमावस – किला कोट			

यह उल्लेखनीय है कि, श्राद्ध पक्ष में होने से निश्चित तिथियों के श्राद्ध दिवस के अनुसार भी आकृतियां बनाई जाती है। रूपांकनों के निर्माण में बनाने वाली कन्या की रूचि प्रधान भूमिका निभाती है।

मालवी गीतों में खोड्या ब्राह्मण का उल्लेख संजा के साथ होता है। श्री वसन्त निरगुणे के अनुसार मालवा–निमाड़ क्षेत्र में प्रचलित संजा सम्बन्धी एक लोककथा है– गाँव का सम्पन्न किसान जाति से अहीर था। उसकी सन्तान नहीं थी। सांझ के समय उधर से साधु–महात्मा निकले। किसान ने साधुओं की बड़ी सेवा की। उन्होंने उसकी उदासी का बार–बार कारण पूछा। साधु–महात्मा ने बताया कि, कुँवारी नदी का पानी, कुँवारी गाय का गोबर, पहली बेंत की गाय का दूध, सांझ से पहले लाओ। किसान नर्मदा का जल, केड़ी का गोबर, पहली बेंत की गाय का दूध, सांझ से पहले ले आया। साधु ने उस जल में गोबर घोलकर धरती पर लीपा। ज्वार के आटे से चौक पूरकर उस पर कलश रखा और गाय के दूध को अभिमंत्रित कर दिया। किसान से कहा कि संध्या के समय अपनी पत्नी को दूध पिला देना। वे चले गये। समय पर किसान के घर कन्या जन्मी। सांझ के समय जन्मी इसलिए संजा नाम रखा गया। वह घर की व गाँव की लाड़ली थी। सखी सहेलियों के साथ खेलती। उसे फूलों से बड़ा प्रेम था। उसने भींत पर गोबर की कुछ आकृतियाँ बना दीं। उन पर फूल चिपका दिये। सखियों ने यह अपूर्व कला देखी। सोलह साल की होने पर पड़ोसी गाँव के गवली लड़के से उसका विवाह कर दिया। गाँव सूना हो गया। काम में गलतियाँ होने पर घर के सब लोग भला–बुरा कहते। उसके एक पुत्र हुआ। अपमान सहन न होने पर पुत्र को लेकर पीहर चल दी। माता–पिता चकित रह गये। सांझी ने कुछ नहीं बताया सहेलियों में वह रोती रही। माता को बालक सौपकर गौबर फूलों की बनी आकृति के पास उसने प्राण त्याग दियें। वह सर्वपित्र अमावस्या थी। अमावस नें प्रकट होकर सांत्वना देते हुये कहा कि सांझी देवी थी। अब कुवांरी कन्याऐं गौबर फूल से उसकी स्मृति में सोलह दिन तक आकृतियां बनाकर गीत गातें हुये पूजा करेगी। तब से सांझीकी परंपरा बन पडी। धीरे–धीरे प्रायः पूरे उत्तर भारत में इस पर्व की व्याप्ति हो गईं। पूर्ण उत्तर भारत में संजा, संज्या, हंज्या, सांजाफूली, सांजुली, सांझी,सांझा, संध्या भिन्न भिन्न नाम से पुकारते हैं। हिंदी व ब्रज खड़ी बोली में – सांझी, राजस्थान में – संझा, बुंदेलखण्ड में – जामुलिया, मामुलिया, महाराष्ट्र में – गुलाबाई, निमाड – सांझाफूली, मालवा – संजा नाम से पुकारते हैं

बारहवीं सदी के श्लोकों से ज्ञात होता है कि, संध्या शांति, सुख, वरदान देती है एवं वंश की वृद्धि करती है। उन्हें माता माना जाता मंगला (मंगलकारिणी) हैं एवं उनसे पति प्राप्ति की प्रार्थना की जाती है। कन्याऐं अपने भावी जीवन की सुख, समृद्धि, शाँति, पति, वंशवृद्धि आदि की कामना इस व्रत पर्व की आराधना द्वारा करती हैं। पाकिस्तान के पंजाब में मंगला नदी तथा पारंपरिक तीर्थ स्थान भी हैं। पंजाब हरियाणा में दुर्गारूप में, राजस्थान में गौरा पार्वती रूप में, ब्रज में राधारानी रूप में, मालवा में लोकदेवी रूप में पूजते हैं।

संजा के पूजन का समय संध्या है क्योंकि, दिनरात की संधि बेला प्रातः सूर्योदय से पूर्व तथा सूर्यास्त के बाद होती है, जब आकाश में तारे न हों और सूर्य हो। संजा की पूजा के अवसर पर बालिकाओं का समूह हंसता खिलखिलाता गीत गाता हैः

संजा तू थारा घरे जा, के थारी मां मारेगा।
के कूटेगा, के डेली में डचकेगा, के चांद गयों गुजरात।
के हिरनी का बडा–बडा दांत, के छोरा छोरी डरपेगा भई डरपेगा।
फिर वे गाती है,जिनमें संजा के बारे में वर्णन होता है–
संजा तू बड़ा बाप की बेटी, तू खावे खाजा रोटी।
तू पेरे माणिक मोती, रऊवाड़ी चाल चाले,
गुजराती बोली बोले, संजा एवड़ो ले, माथे बेवडो ले ।

संजा ग्राम व किसानी परंपरा का कलात्मक अंकन है। ग्रामीण क्षेत्रों में ये परंपराऐं चल रही हैं, किंतु नगरीय क्षेत्रों में ये परंपराऐं विदाई ले चुकी हैं। सीमेंट के पक्के मकानों में लगे महँगे रंगों के ऊपर गोबर लगाने की अनिच्छा,गोबर की गंध, गोबर की आसानी से अनुपलब्धता, एकल परिवार, जैसे कई कारणों से यह कला नई पीढ़ी

से दूर होती जा रही है। यदि लोकरक्षक समाज समय रहते नहीं जागा तो ये परंपराऐं इतिहास की वस्तु बन जाएगी।

इसी उद्देश्य से वस्त्र एवं परिधान डिजाइनरों द्वारा इस लोक कला को नवीन से रूप में एवं आधुनिक काल में पहने जाने वाले परिधानों एवं उपयोगी वस्तुओं में प्रस्तुतकर राजीव व जीवंत रखने का प्रयास करना होगा। जागृति एवं वर्तमान जीवन शैली में इनका उपयोग एवं प्रदर्शन इस कला के महत्व को सजीवता प्रदान कर सकेगा।

वर्तमान अध्ययन में संजा के रूपांकनों को समझकर एवं उनसे प्रेरित होकर परिधानों में उपयोग किया गया है। परिधान विकसित करने के लिए सूती लिनन एवं सूती साटिन वस्त्र का प्रयोग किया गया है। इसमें हाथ की कढ़ाई कार्य से परिधानों पर रूपांकनों को उकेरा गया हैं। उपभोक्ता द्वारा परिधान डिजाइनों को वरीयता पूर्वक आंकनें के लिए 30 उत्तरदाताओं से आंकडे एकत्रित किए गए हैं। वर्तमान अध्ययन से संबंधित आंकडों को प्रतिशत, स्कोर एवं भारांकित प्राप्तांक का उपयोग कर सांख्यिकीय रूप से कोडित, सारणीबद्ध एवं विश्लेषित किया गया है।

परिणाम एवं चर्चाएँ

इस अध्ययन हेतु संजा के रूपांकनों को प्रयुक्त कर छः परिधान विकसित किए गए। जिसके लिए कोरल ड्रा साफ्टवेयर का प्रयोग कर संजा के स्पष्ट रूपांकनो को बनाया गया है। हाथ से बनाए रूपांकनों को परिधानों पर विभिन्न रूप में स्थापन किया गया । उपयुक्त चयनित स्थापन कर परिधान विकसित किए गए। डिजाइन किए गए परिधान की रैंकिंग विशिष्ट आयुवर्ग की किशोरियों 6– 16 वर्ष द्वारा कराई गई। परिधानों की व्यावसायिक रूप से व्यावहारिकता के अध्ययन हेतु 30 उत्तरदाताओं की वरीयताओं को लिया गया। जिसमें कम आयु के उत्तरदाताओं में उनकी माताओं ने सहयोग किया। परिणाम निम्नानुसार हैं:

किशोरियों द्वारा परिधानों की वरीयता –डिजाइन किए गए परिधानों की वरीयता का आंकलन करने के लिए छः सूत्रीय वरीयता पैमाना विकसित किया गया था। रूपांकन का चयन, रूपांकन का परिधान में स्थापन, रूपांकन निर्मित करने का तरीका, रूपांकन में प्रयुक्त रंग, पृष्ठभूमि और समग्र उपस्थिति के साथ में उपयुक्तता, परिधान डिजाइन की आकर्षकता।

मूल्यांकन हेतु मानदण्ड निम्नानुसार दिया गया:

सर्वाधिक पसंद– 05, अधिक पसंदीदा– 04, पसंद– 03, कम पसंद– 02, न्यूनतम पसंद– 01

संजा कला रूपांकनों से प्रेरित हस्त कढ़ाई कर निर्मित परिधानों की झलक

तालिका 01: हाथ से कढ़ाई कर विकसित परिधानों की डिजाइनों के लिए वरीयता (n = 30)

परिधान कोड सहित डिजाइन	प्राप्तांक	वरीयता
G1	068	V
G2	075	III
G3	072	IV
G4	083	II
G5	044	VI
G6	108	I

सबसे पसंदीदा डिजाइन G6 रही। (प्राप्तांक 108), इसके बाद परिधान डिजाइन G4 ने दूसरा स्थान प्राप्त किया, वरीयता श्रेणी में तीसरा स्थान G2 ने प्राप्त किया, परिधान डिजाइन की पसंद फिर G3-G1-G5 क्रमशः रहीं।

तालिका 02: तैयार परिधान में रूपांकनों की समग्र उपस्थिति के लिए वरीयता के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

परिधान कोड सहित डिजाइन	माध्य प्राप्तांक	वरीयता
G1	2.3	V
G2	2.5	III
G3	2.4	IV
G4	2.8	II
G5	1.5	VI
G6	3.6	I

डिजाइन किए समस्त परिधानों में G6 को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इसके बाद परिधान डिजाइन G4 ने दूसरा स्थान प्राप्त किया, वरीयता श्रेणी में तीसरा स्थान G2 ने प्राप्त किया, परिधान डिजाइन की पसंद G3-G1-G5 क्रमशः रहीं।

तैयार परिधान के लिए लागत गणना

तैयार परिधान के लागत मूल्य की गणना करने के लिए लिए उपयुक्त कच्चे माल एवं श्रम लागत जोडा गया। श्रम लागत निश्चित करने के लिए एक कुशल कारीगर को कलेक्ट्रेट मूल्य पर सरकार द्वारा निश्चित मूल्य रू 400/– प्रतिदिन देना तय किया गया। कढ़ाई कर तैयार किए गए परिधानों का मूल्य निश्चित करने हेतु उत्पाद तैयार करने वाले समय, सामग्री एवं निर्मित करने हेतु आवश्यक समय की गणना की गई। उत्पादों में कढ़ाई करने हेतु 6–8 घंटे लगे। मूल्य निर्धारित करने हेतु लागत मूल्य में 30 प्रतिशत का लाभ मार्जिन जोडा गया। तालिका 3 में विकसित परिधान की लागत का पता चलता है।

हाथ से कढ़ाई कर निर्मित सभी परिधान डिजाइनों को उनके रूपांकन स्थापन, निर्माण, स्वच्छ कार्य, उपयोगिता एवं विशिष्टता हेतु सराहा गया। मात्र 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं को संजा एवं उनके रूपांकन के बारे में जानकारी हैं।

तालिका 3: हाथ की कढाई से निर्मित संजा रूपांकनों से प्रेरित डिजाइनर परिधानों की लागत मूल्य एवं कीमत

(वस्त्र मूल्य–130/– प्रति मीटर)

	कच्चे माल का मूल्य				लागत गणना एवं कीमत		
परिधान कोड सहित डिजाइन	वस्त्र का मूल्य	सहायक सामग्री मूल्य	सिलाई लागत	कढ़ाई मूल्य	लागत मूल्य	लाभ मार्जिन 30 प्रतिशत	कीमत
G1	330/-	50/-	100/-	200/-	680/-	204/-	884/-
G2	260/-	50/-	150/-	100/-	560/-	168/-	728/-
G3	260/-	50/-	150/-	200/-	730/-	219/-	949/-
G4	455/-	50/-	250/-	400/-	1155/	347/-	1502/-
G5	260/-	50/-	200/-	200/-	710/-	213/-	923/-
G6	390/-	50/-	250/-	600/-	1290/	387/-	1677/-

तालिका 4: हाथ की कढाई कर तैयार किए गए परिधानों की कीमत की वरीयता के बारे में उत्तरदाताओं की राय के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण (n = 30)

परिधान कोड सहित डिजाइन	कीमत	अधिक		सामान्य		कम	
		उत्तरदाता संख्या	%	उत्तरदाता संख्या	%	उत्तरदाता संख्या	%
G1	884/-	08	26.66	20	66.66	02	06.66
G2	728/-	02	06.66	25	83.33	03	10.00
G3	949/-	08	26.66	17	56.66	05	16.66
G4	1502/	14	46.66	10	33.33	06	20.00
G5	923/-	03	10.00	24	80.00	03	10.00
G6	1677/-	04	13.33	8	26.66	18	60.00

अधिकांश उत्तरदाताओं को G1,G2, G3 एवं G 5 की कीमत सामान्य लगी। साथ ही उत्तरदाताओं को G4 की कीमत अधिक लगी, जबकि G6 की कीमत कम लगी।

डॉ. सुधा एवं लतिका द्वारा 2019–20 में संजा से प्रेरित होकर कुषन मूल्य वर्धित उत्पाद विकसित किए। परिणामों से ज्ञात हुआ है कि, विकसित हाथ मुद्रित कुशन सांझी रूपांकनों से प्रेरित डिजाइन अत्यधिक पसंद किया गया है, एवं इनकी बाजार क्षमता बेहतरीन है।

सुजाता द्वारा 2009 में "रजाई बनाने और मूल्यवर्धन के पुर्नजागरण" पर जांच के तहत मूल्यवर्धित उत्पाद विकसित किए है । मूल्य वर्धित उत्पाद विकसित किए गए । मूल्यवर्धित उत्पाद पैचवर्क रजाई उत्पादों के उत्पादन की लागत रू 52.86/– से लेकर रू 176.90/– तक आई थी और कारीगरों के लिए बेहतर मुनाफा कमाने के लिए उपयुक्त तकनीक साबित हुई।

निष्कर्ष

संजा रूपांकनों का प्रयोग कर, हाथ की कढ़ाई कर, तैयार विशेष आयु वर्ग के लिए परिधान डिजाइन विकसित करने का विचार, अन्य विभिन्न दैनिक उपयोगी वस्तुओं की डिजाइन एवं एसेसरीज डिजाइन करने के लिए उपयोगी होगा। साथ ही पारंपरिक लोककला के बारे में वर्तमान पीढ़ी को जागरूक भी करेगा। यह अध्ययन वस्त्र एवं परिधान डिजाइनरों के साथ साथ इंटीरियर, ज्वेलरी एवं एसेसरीज डिजाइनरों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। इस विचार से प्रेरित होकर अन्य अभिनव वस्तुएँ निर्मित करने के लिए की प्रेरित होगें। संजा के रूपांकनों से प्रेरणा लेकर तैयार डिजाइन परिधानों को कीमत अनुकूल पाई गयी।

संदर्भ सूची

1. Bable, Sudha; Sachihar, Latika (2020) Designing Cushions Picking Inspiration from Traditional Folk Painting:Sanjhi, *International Journal of Science and Research* (IJSR) ISSN 2319-7064 volume 9 issue 1.
2. Rajpurohit, Bhagvatilal (2008) *Madhya Pradesh ke Malwa Janpad ki chitrakala-Chitravan*, published by Adivasi Lok Kala avam Tulsi Sahitya Academy MP Sanskruti Parishad, Bhoipal 169-183.
3. http://www.royalorienttrain.com/rajasthan/paintings/folk painting.html
4. http://rajasthantravelswalks.com/explore/things-do/jal-sanjhi
5. http://ignca.nic.in/sanjhi/recommendation.html

****